राष्ट्रीय प्रसंग

जुलाई-सितम्बर, 2010 मूल्य : रु० 15/-

सम्पूर्ण सामयिक पत्रिका

आर. के. नारायण का गॉव

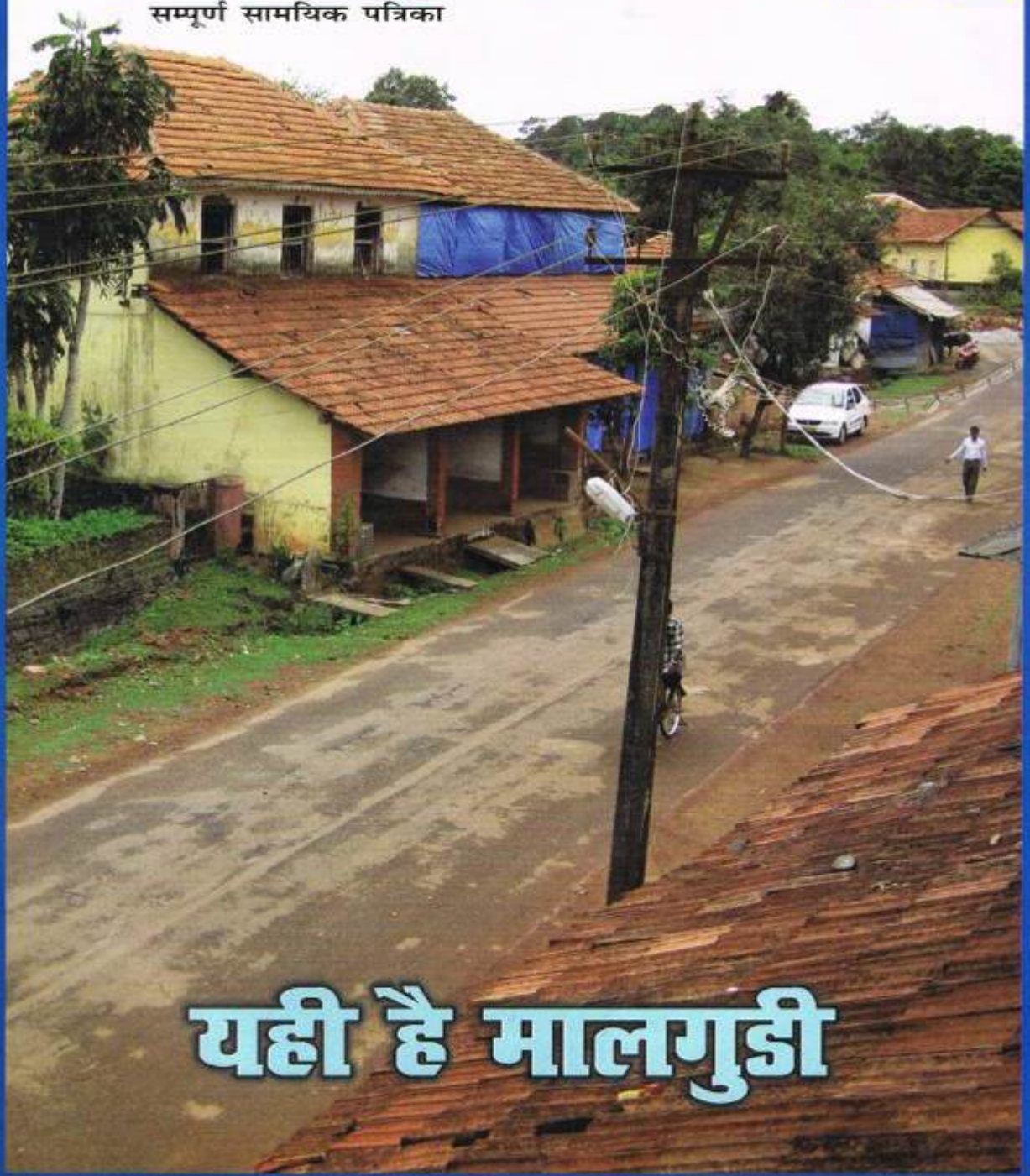

यही है मालगुडी

दिल है छोटा-सा, छोटी-सी आशा....

❑ रामधारी सिंह दिवाकर

पिछले कुछ महीनों से गाँव नहीं जा सका। पटना में ही अपनी उलझनों में उलझा रहा। मुझ-जैसे लेखक के लिए गाँव से संपर्क का टूटना, रचनात्मक स्त्रोत का सूखना है। वैसे लगभग प्रतिदिन परिवार या गाँव के किसी-न-किसी से बातचीत हो ही जाती है। इसलिए ऐसा नहीं लगता कि गाँव से बहुत दूर हूँ। फिर भी सारी जानकारियाँ तो फ़ोन से मिलतीं नहीं। जैसे कि मुझे यह जानकारी नहीं थी कि घर में कम्प्यूटर आ गया है ! शीघ्र ही इंटरनेट की सुविधा भी उपलब्ध हो जायेगी। बड़े भतीजे मुन्ना ने बताया कि उसकी बेटी यानी मेरी पोती के लिए कम्प्यूटर खरीदा गया है। पोती मैट्रिकुलेशन में पढ़ती है। मुझे यह जानकारी भी नहीं थी कि कम्प्यूटर की पढ़ाई अब पाठ्यक्रम में शामिल हो गयी है। यह जानकारी भी मिली कि सिर्फ़ अपने परिवार में ही नहीं, दियादी रिश्ते के दो परिवारों में भी कम्प्यूटर है।

पटना में रहने के बावजूद मैंने अपने को अपने गाँव से पिछड़ा महसूस किया। मुझे लगा, मैं जड़-स्थिर हूँ और मेरा गाँव तेजी से आगे निकल रहा है। मैं नहीं जानता इंटरनेट की तकनीक। नहीं जानता कि ट्वीटर, ब्लॉग, फेसबुक वगैरह क्या होते हैं !

परंपरित पढ़ाई का पूरा ढाँचा ही बदल गया। पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर साइंस आ गया। पहले सीधी-सादी पढ़ाई थी-बी०ए०, एम०ए० या बी०एस०सी०, एम०एस०सी०, इंजिनियरिंग, मेडिकल वगैरह। अब नये-नये विषय हैं: कम्प्यूटर साइंस और बिजिनेस मैनेजमेंट के ही नहीं, फैशन डिजाइनिंग, होटल मैनेजमेंट और पता नहीं क्या-क्या ! एक विषय की कई शाखाएँ-प्रशाखाएँ !.... जमाना साइंस और

टेक्नॉलॉजी का है। आर्थिक उदारीकरण, विश्व बाजार, वैश्विक पूँजीवाद.....अंधाधुंध कमाई के सैकड़ों स्त्रोत ! अब पुरानी विद्याएँ पीछे छूट गयी हैं। नये-नये विषय हैं, पैसे कमाने की नई-नई संभावनाएँ हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ जाल बिछाए बैठी हैं।..... कैम्पस सेलेक्शन.....।

और ये सारे नये-नये विषय गाँव के संपन्न परिवारों के लड़के-लड़कियों के लिए अपरिचित नहीं हैं। मेरे गाँव की कुछ लड़कियाँ ऐसे विषयों की पढ़ाई के लिए दूर-दूर चली गयी हैं और मैं अभी तक मैट्रिकुलेशन के बूढ़े विषयों को लेकर बैठा हूँ। सोचता हूँ, सन् 1960 में जहाँ से मैट्रिक पास किया, मेरा स्कूल अभी तक वहीं पड़ा हुआ है !

पिछले साल लंबे समय तक गाँव में रहा तो गाँव के अपने उस हाई स्कूल को भी नये सिरे से जाना जहाँ से पूरी आधी सदी पहले मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की थी। पूरी आधी सदी... यह वाक्यांश लिखते हुए सोच रहा हूँ-मैं कितना पूराना हो गया ! तब हाई स्कूल के किसी भी वर्ग में कोई लड़की नहीं पढ़ती थी। आस-पास के तमाम स्कूलों का भी यही हाल था ! एक भी लड़की नहीं !

स्कूल लड़कों के लिए था, लड़कियों की पढ़ाई ज्यादा से ज्यादा मिडिल तक। गाँव का चाहे कितना सुखी-संपन्न परिवार हो, लड़की ने मिडिल पास कर लिया तो हो गया। इसी कारण मेरी बहनें जो आगे पढ़ने का हौसला रखती थीं, नहीं पढ़ सकीं। शादी हुई, अपनी-अपनी ससुराल गयीं सब। फिर धीरे-धीरे हसरत भी मर जाती है !

वही हाई स्कूल है जिसे मैंने सन् 6 में छोड़ा था और जिसमें एक भी लड़की नहीं पढ़ती थी, अब स्थिति यह है कि लड़के-लड़कियों का अनुपात सत्तर-तीस के लगभग है। इतना ही नहीं, लड़कियों के लिए एक अलग कन्या उच्च विद्यालय है-स्कूल मैदान के उत्तर नरपतगंज हाट के

पुरी, मथुरा, एवं वृंदावन इसके प्रमुख केन्द्र थे।

ब्रज के लोगों ने श्रीकृष्ण को एक प्रेमी माना और इसलिए उन्होंने श्रीकृष्ण से प्रेम किया। परन्तु बाद में उन्होंने जाना कि श्रीकृष्ण के पास कुछ चमत्कारी व अद्‌भुत शक्ति है। उनके प्यार से सभी नर-नारी ही नहीं बल्कि समस्त गायें, बछड़े, मोर-मोरनी व जंगल के अन्य पक्षी भी उनके चारों ओर खड़े होकर उनके मधुर संगीत से उनकी ओर खिंचे चले आते थे। वास्तव में, उन्होंने प्रकृति के प्रति प्रेम, मानवीय कार्य व प्रेरणाएँ तथा आंदोलनों और यहाँ तक कि पशुओं को भी अपनी दैवीय परछाई के धागे में पिरोया। कृष्ण के विषय ने मुझे इसलिये आकृष्ट किया।"

इस प्रदर्शनी में पी० के० राय ने 25 से अधिक जल रंग चित्र प्रस्तुत किये। कृष्ण एवं उनके भक्त के चित्रों के अलावा उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण को बाँसुरी बजाते हुए विभिन्न पशुओं एवं पक्षियों के साथ भी घनिष्ठता दर्शाते हुए चित्र बनाए। इसमें कुछ चित्रों को उन्होंने लोक कला के रूप में भी ढालने की कोशिश की है। मेवात और फारूखनगर के जीवन पर राय महाशय फिलहाल चित्र शृंखला निर्मित करने में प्राणपण से जुटे हैं।

फिनिक्स का संगीत

मुंबई की शुक्ला चौधरी ने पिछले दिनों 'द फिनिक्स सिंग्स अ सांग' शीर्षक से अपनी चित्र श्रृंखला की प्रदर्शनी दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में लगाई, तो दिल्ली के कला जगत ने उन्हें बहुत गर्म जोशी से लिया। दरअसल, यह अमर पौराणिक पक्षी एक अर्से से उनके अंतर्मन में घुमड़ रहा था। बकौल शुक्ला कुछ साल पहले उनके एक निकटतम मित्र ने उन्हें इस अनूठे पक्षी की कथा सुनाई जो खुद बार-बार अपनी राख से फिर उठा खड़ा होता है। शुक्ला को लगा कि यह पक्षी एक स्त्री के जीवन दर्शन का सच्चा प्रतीक है, क्योंकि एक स्त्री अपने जीवन में बारंबार

अपनी राख से जाने कितने बार जिंदगी शुरू करती है। स्त्री को संबल देती है प्रकृति। इसलिये शुक्ला चौधरी अपनी कृतियों में प्रकृति के साथ बेहद अंतरंग दिखती हैं। फिनिक्स को बीते कई वर्षों से शुक्ला चौधरी प्रकृति के संगीत के संग जीती रहीं और अंततः यही अनुभूति चित्र शृंखला के रूप में कैनवास पर उतर आयी। इस अमर पक्षी की फुदक और उड़ान के कार्य व्यापार को वे सूर्य की कोमल किरणों से लेकर घास के तिनकों और क्षितिज के छोर तक महसूस करती रही हैं। इसलिये उनकी इस चित्र शृंखला में उल्लास के चटख रंग हैं, तो धूसर उदासी की विह्वलता भी। उनका चित्र 'काल बैशाखी', 'प्रभात का प्रकाश', 'अंधकार पर लिपटी रोशनी', 'कौंधती शाम', 'फूलों की घाटी' और 'उज्ज्वल क्षितिज' दर्शकों के मन के जलतरंग को बड़े उमंग से छेड़ता है। कुछ इस तरह मानों राख की ढेर' से फिर पंख फड़फड़ाते हुए यह अमर पक्षी-फिनिक्स नव-जीवन की उड़ान भर रहा हो। शांति निकेतन और पुणे विश्वविद्यालय से चित्रकला की पढ़ाई कर चुकी शुक्ला चौधरी कलाकार के संग-संग सुघड़ गृहणी भी हैं। उनके पति अभिजीत चौधरी मुम्बई में सेवारत हैं। अभिजीत और शुक्ला के तीन बेटियाँ हैं—अमृता, सुधांविता और उषांविता। शुक्ला की कला यात्रा में उनका परिवार हमेशा सहयोग में रहता है। जाहिर है, शुक्ला चौधरी के पारिवारिक संगीत की लयकारी उनके चित्रों की लयकारी से एकमेक है।

छत्तीसगढ़ी मिट्‌टी की सुगंध

माओवादियों और सरकार की तनातनी में जहाँ हरित-भरित प्रांत छत्तीसगढ़ लहूलुहान है, वहीं इस हिंसक वातावरण में एक प्यार भरा कोना कला का है, जहाँ के कलाकार अपने तरीके से प्रकृति के आलिंगन में बैठे इस प्रांत की कला को यहाँ की मिट्‌टी की सुगंध के

संग उकेर रहे हैं। और यही नहीं पुरानी पीढ़ी के दिवगंत चित्रकारों की कृतियों को भी फिर से दर्शकों के समक्ष लाकर उसकी याद ताजा कर रहे हैं। पिछले दिनों दिल्ली में ललित कला अकादमी की गैलरी में छत्तीसगढ़ के चित्रकार एल० एन० वर्मा ने न सिर्फ अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगायी, बल्कि अपने दिवंगत कलाकार पिता क्षेमचंद वर्मा की अनूठी कृतियों को भी साथ-साथ प्रस्तुत किया। एल० एन० वर्मा की 'अर्थ' और स्व० क्षेमचंद वर्मा की वाटर कलर में 'छत्तीसगढ़ी ग्रामीण स्त्री' का चित्र वाकई अद्‌भुत थी। कला समीक्षक पद्मश्री केशव मलिक कहते हैं, "एल० एन० वर्मा की कृतियाँ जिजीविषा से भरपूर हैं।" कला समीक्षक बलदेव राज पनेसर, अर्चना राय और हरि राय मीरचंदानी भी मानते हैं कि छत्तीसगढ़ी जीवन और संस्कृति के मर्म की पकड़ वर्मा को भरपूर है। ●